❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वदेवो महाँ असि। सामवेद 1026
विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।
O the Lord of the universe !
You are the Greatest of all.

वर्ष 39, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 जून, 2016 से रविवार 19 जून, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य वीर दल राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर – 2016 के अवसर पर

अंधविश्वास उन्मूलन जन जागरण यात्रा सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से दिल्ली में वर्षों बाद आयोजित किए जा रहे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के 15 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में देशभर के राज्यों से पधारे सैकड़ों वरिष्ठ आर्यवीरों का शारीरिक, आत्मिक,एवं बौद्धिक प्रशिक्षण का कार्य प्रधान सेनापति डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के निर्देशन में अनेक वरिष्ठ शिक्षकों के माध्यम से संचालित किया जा रहा है। शिविर के मध्य रविवार 12 जून, 2016 को सायं 5:30 बजे आर्यवीरों द्वारा क्षेत्र में अंधविश्वास उन्मूलन जन जागरण यात्रा एवं सार्वजनिक सभा का आयोजन सैन्ट्रल मार्केट पंजाबी बाग (पश्चिम) में किया गया। जन-जागरण यात्रा एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल से आरम्भ हुई और विभिन्न मार्गों, से होते हुए सैन्ट्रल मार्केट में जन सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। इस अवसर पर सभी आर्यवीरों के हाथों में अंध विश्वास एवं पाखण्डों के प्रति समाज को जागृत करने वाले पोस्टर, तख्तियां एवं ओ३म् ध्वज थे। आर्य वीर ड्रम की ताल पर कदम से कदम मिलाते हुए, उद्घोष करते हुए एवं शिविर में प्राप्त प्रशिक्षण का प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे।

यात्रा के मार्ग में आर्यसमाज सुदर्शन पार्क की ओर से सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गई एवं मेन रिंग रोड पर एक भव्य मंच बनाया गया जहां से उपस्थित विद्वानों ने अंध विश्वास एवं पाखण्ड के विरुद्ध उद्बोधन दिए तथा हजारों की संख्या में पत्रकों का वितरण किया गया। – शेष पृष्ठ 5 पर

समापन एवं दीक्षान्त समारोह : 19 जून, 2016 सायं 4:30 बजे

एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग (प.), नई दिल्ली-26

विशेष आकर्षण

दीक्षान्त यज्ञ ★ सुमधुर संगीत ★विशेष टॉर्च ड्रिल ★ पुरस्कार वितरण ★ व्यायाम विद्याओं का भव्य प्रदर्शन

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर विभिन्न राज्यों से पधारे सैंकड़ों आर्यवीरों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

ज्वलन्त मुद्दा

जागो! इतिहास दोहरा न दें : पहले कश्मीर, कैराना, कांधला और....

असम, केरल हो या बंगाल, वहां के मुस्लिम बहुल जिलों में हिन्दुओं को भय के साए में ही जीना पड़ रहा है। पश्चिम बंगाल के 22 से 24 जिलों में मुस्लिम आबादी को 50 प्रतिशत से ऊपर वे पहले ही पहुँचा चुकी है, केरल में क्या हो रहा है, वहां से घबराये और डरे हुए हिन्दू लोग मुस्लिम बाहुल इलाकों से पलायन कर रहे हैं, मलप्पुरम और मालाबार से कई परिवार सुरक्षित ठिकानों को निकल गये हैं और दारुल-इस्लाम बनाने के लिये जगह खाली होती जा रही है। 580 किमी. लम्बी समुद्री सीमा के किनारे बसे गाँवों में पोन्नानी से बेपूर तक के 65 किमी इलाके में एक भी हिन्दू मछुआरा नहीं मिलता, सबके सब इलाका छोड़कर भाग चुके हैं।

किसी कवि ने कहा है कि हादसा वह नहीं जो हो चुका, हादसा वह है कि फिर सब लोग चुपचाप हैं। ये कोई भय नहीं दिखाया जा रहा बल्कि राज्य सरकारों की विफलता का नतीजा है कि जो इस प्रकार के माहौल के खिलाफ सख्ती से नहीं निपटती। कई रोज पहले दिल्ली से मात्र 124 किमी. दूर कैराना के सांसद हुकुम सिंह ने कहा कि कैराना में रंगदारी की मांग पूरी न करने पर हिन्दू व्यापारियों की हत्या कर दी जाती है। अब तक छह व्यापारियों की हत्या हो चुकी है जिससे भय का माहौल बना हुआ है और दो साल के भीतर करीब 250 हिन्दू परिवार कैराना से पलायन कर चुके हैं। ज्ञात हो 2014 में शिवकुमार, राजेंद्र व विनोद को रंगदारी न देने पर बेरहमी से मार दिया गया था। इसके बाद लूट, अपहरण की हत्या की घटनाएँ होती रहीं पर कश्मीर की तरह प्रशासन मूक बना देखता रहा जिसका नतीजा यह हुआ कि कैराना की मिश्रित आबादी वाले मोहल्ले दरबार कलां, आर्यपुरी, गुंबद, घोसाचुंगी आदि से हिन्दू मकान दुकान बेचकर अन्य शहरों में विस्थापित हो गये। कई घर आज भी ऐसे हैं जिनके बाहर बोर्ड लगा है मकान बिकाऊ है। इसके अलावा अकबरपुर गांव सुन्हेटी में कश्यप समाज की महिला की गैंगरेप के बाद हत्या, अलीपुर गांव में कश्यप समाज के लोगों की पिटाइ करके उनके खलिहान में आग लगा दी गई। जिस तरह 90 के दशक में कश्मीर से पंडितों पर जुल्म ढहाकर उन्हें पलायन को मजबूर किया गया, वैसे ही हालात आज कैराना में बनाए जा रहे हैं, जिससे वहां के लोग पलायन कर जाएं। यह बताना प्रासंगिक होगा कि पलायन को मजबूर सभी व्यापारी और गरीब लोग हिन्दू थे, क्या इस बात से यह स्पष्ट है कि इस क्षेत्र के हिन्दुओं को या तो भय या आतंक के साए में जीना होगा या वहां से पलायन करना पड़ेगा?

यदि इस संदर्भ में बात करें और कश्मीरी पंडितों पर हुई हिंसा, उनकी औरतों व बच्चियों के साथ बलात्कार उसके बाद पलायन और पलायन के बाद उनके शरणार्थी जीवन से कौन परिचित नहीं है। शुरूआती दिनों में मजहबी उन्मादियों ने कश्मीरी पंडितो पर भी कुछ ऐसे ही छिटपुट हमले किये थे। धीरे-धीरे धार्मिक – शेष पृष्ठ 7 पर

वेद-स्वाध्याय

कुशल दुहने वाला यज्ञरूपी धेनु का दोहन करे

उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुक् उत दोहदेनाम्। श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नो अभीद्धो घर्मस्तदु षु प्रवोचम्।। -ऋ. 1/164/26; अथर्व. 7/73/7
ऋषि: **दीर्घतमा**।। देवता- **विश्वेदेवाः**।। छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ-एतां सुदघां धेनुम् =इस अच्छी दुही जानेवाली धेनु को मैं **उपह्वये**=बुलाता हूं **उत एनां सुहस्तः गोधुक दोहत्**=और अच्छा कुशल दोहनेवाला इस धेनु को दुहे। **सविता नः श्रेष्ठं सवं साविषत्**= प्रेरक परमात्मा इस श्रेष्ठ रस को हमारे लिए प्रेरित करे। **धर्मः अभीद्धः तत् उ सु प्रवोचम्**=धर्म खूब तप रहा है, इसीलिए यह उचित विनती कर रहा हूं।

विनय - ग्रीष्म काल प्रचण्डता से तप रहा है, वर्षा के बिना सब वृक्ष-वनस्पतियां भी सूखी जा रही हैं, इसलिए मैं इस मेघ रूपी धेनु (माध्यमिक वाणी) को पुकार रहा हूं। यह आकाश मे फिरती हुई खूब उदक दे सकने वाली मेघ-धेनु (माध्यमिक वाणी) आये और अन्तरिक्ष निवासी मध्यम देव (इन्द्र) एक कुशल दोहने वाले की भांति इसे दुह लेवे। ओह! यह सब परमात्मा की इच्छा के बिना कैसे हो सकता है? भगवान की प्रेरणा के बिना तो संसार में एक भी चेष्टा नहीं हो सकती, अतः मैं उनकी करुणा का भिक्षुक हूं। उनकी करुणामय प्रेरणा से यह धेनु हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ रस को देवे, वर्षा रूपी दूध पिलाकर इस झुलसी हुई भूमि को तृप्त कर दे। अरे! यह पृथिवी रूपी धर्म' तप रहा है, जलाये जा रहा है, इसीलिए मैं तुम्हे पुकार रहा हूं। परितप्त व्याकुल संसार वर्षा की मांग मचा रहा है।

मैं बहुत तप कर चुका हूं, बड़े-बड़े क्लेश उठा चुका हूं, अब ज्ञान-पिपासा ने मुझे बिल्कुल व्याकुल कर दिया है। इसलिए, हे खूब ज्ञानदुग्धामृत दे सकने बालीसरस्वती देवी रूपी धेनो! तुम आओ, हृदयान्तरिक्ष में रहने वाला देव-जो कुशल दोहने वाला मनोदेव है- वह तुम्हें दुह देवे। उस सर्वान्तर्यामी प्रभु की ऐसी दया हो कि मेरे लिए यह सरस्वती-धेनु अब तो उस ज्ञान-दुग्ध को दुह देवे जो संसार में सर्पोत्तम रस है। मुझे तप करते हुए बहुत काल हो गया है। गर्मी के बाद वर्षा आया ही करती है,तो अब तो मेरे लिए ज्ञानामृत पान करने का समय आ गया होगा। मैं इसीलिए पुकार रहा हूं, क्योंकि मुझमें ज्ञान-पिपासा की अग्नि प्रचण्डता से धधक रही है। इस समय ज्ञानामृत न मिला तो मैं जल जाऊंगा; ज्ञानामृत मिल गया तो मैं इस समय इस सबको हज़म कर सकता हूं। मेरी ज्ञान-पिपासा का धर्म तुम्हें पुकार रहा है।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

अब ईसाईयत को खतरा

लगता है, पूरी दुनिया का इस्लाम और ईसाइयत भारत से भिन्न है। भारतीय संविधान धर्म की स्वतंत्रता की गारंटी देता है जो किसी अन्य देश में नहीं मिलती। किन्तु फिर भी इन पंथों के धार्मिक ठेकेदारों को झूठ, फरेब और धोखे से भरी अपनी धार्मिक नींव हमेशा खिसकती दिखाई देती है। किन्तु यह लोग कब तक जनमानस की बुद्धि पर राज करेंगे? एक न एक दिन तो लोगों के भ्रम का जाल हटेगा ही; ज्ञात हो पिछले दिनों योग पर ओ३म् के उच्चारण को लेकर इस्लाम जगत से जुड़े कुछ लोगों ने अतार्किक बयान मीडिया के सामने रखते हुए कहा था कि योग के दौरान ओ३म् का उच्चारण करने से हमारे मजहब को खतरा है। बिलकुल ठीक ऐसा ही बयान देते हुए मिजोरम के 13 चर्च प्रमुखों ने चर्च के सदस्यों को योग से दूर रहने को कहा है। उनका कहना है कि इसका उपयोग ईसाइयों को धर्मपरिवर्तन कराने के लिए किया जा सकता है। मिजोरम सिनॉड ऑफ प्रेस्बीटेरियन चर्च के वरिष्ठ कार्यकारी सचिव 'रेव ललरैमलियाना पचुउ' ने कहा कि "चर्च के लिए योग कुछ ऐसा है जो ईसाइयों में नहीं माना जा सकता है। चर्चों के संगठन एम.के.एच.सी. को सदस्यों के लिए संदेश देने को कहा गया है। एम.के.एच.सी., योग को ईसाई धर्म की शिक्षा और विश्वास के खिलाफ मानती है। अतः हम इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि योग हिंदू संस्कार है, जोकि ईसाई धर्म में मिश्रित नहीं हो सकता है। योग किसी स्वास्थ्य में लाभदायक हो सकता है मगर यह ईसाईयों के अपने तरीकों से मेल नहीं खाता है।"

ललरैमलियाना पचुउ के बयान के बाद समूचे ईसाई जगत से कई प्रश्न खड़े हो गये हैं कि जब ईसाइयत के ठेकेदार अमरीका, यूरोप के पादरियों को योग से कोई खतरा नहीं तो फिर भारत की ईसाइयत को किस बात का खतरा है? या फिर भारत की ईसाइयत की बुनियाद नवनिर्मित है। इसके ढहने का भय है। हो सकता है, इनकी चिंता का विषय यह भी हो कि गरीब आदिवासी इलाकों में धन का लालच देकर, ढोंग या चमत्कारिक पाखण्ड दिखाकर जिन लोगों को उनके मूल धर्म से भटकाया है। कहीं वो फिर वापिस अपनी मूल संस्कृति में न चले जायें और इन लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए विदेशों से मिलने वाली राशि बंद न हो जाये! किन्तु इसमें योग को दोष क्यों? दोष यदि कहीं है तो इन लोगों की अंतरात्मा में बैठे धूर्त कपटी स्वभाव में है। मिजोरम में हिन्दू समुदाय मात्र 2.7 प्रतिशत हैं। 2001 में वहां 3.55 प्रतिशत हिन्दू थे लेकिन बीते दस सालों से उनकी आबादी में गिरावट आई है।

आजादी के समय मिजोरम, मेघालय और नागालैंड की आबादी हिन्दू बाहुल थी, जोकि अब 60 साल में विदेशी मिशनरियों के भरपूर सहयोग के कारण ईसाई बहुसंख्यक बन चुके हैं और हिन्दू वहां अल्पसंख्यक बन कर रह गए हैं। इस सब में गौर करने लायक बात यह है कि भारत जैसे विकासशील देशों में इन मिशनरियों को सहयोग पहुँचाने वाले व्यक्ति को अक्सर पुरस्कारों से नवाजा जाता है।

मदर टेरेसा को शांति का नोबल और संत की उपाधि से नवाजा जा चुका है, बिनायक सेन को कोरिया का शांति पुरस्कार दिया गया, अब इन महोदय का नामांकन भी जैसे-तैसे कर दिया जायेगा मैगसेसे हो, नोबल हो या कोई अन्य शांति पुरस्कार हो! इनके मिशनरियों के अनुसार सिर्फ सेकुलर व्यक्ति ही सेवा और शांति के लिए काम करते हैं। तभी आज तक एक भी हिन्दू धर्माचार्य, हिन्दू संगठन, हिन्दू स्वयंसेवी संस्थाएं जोकि समाज के लिए सेवा व जागरूकता के लिए काम करके इन पुरस्कारों से अछूते रह गये। आखिर क्यों? क्या धर्मांतरण के गोरखधंधे में लगे विश्व भर में काम करने वाले अपने कर्मठ कार्यकर्ताओं, को पुरस्कार के रूप में मेहनताना पहुँचाने के लिये ही इन पुरस्कारों का गठन किया गया है? अंधविश्वास और धार्मिक कट्टरता को अब तक किसी से कोई डर नहीं था, न तो विज्ञान से और न ही तर्कों से। यह लोग खुलेआम अपना धंधा कर रहे थे लेकिन अब योग के बढ़ते प्रभाव के कारण इन क्षेत्रों में खलबली मचने लगी है। योग में मामले पर चिकित्सा विज्ञान के जानकार भी एक साथ हो रहे हैं। ऐसे में इन लोगों का डर स्पष्ट दिखाई दे रहा है, क्योंकि अब विज्ञान जितना आगे जायेगा उतना ही वैदिक धर्म को लोग स्वीकारते जायेंगे।

-सम्पादक

बोध कथा

त्याग का सम्मान

एक था कृपण, इतना कंजूस कि अपने-आप पर भी धेला खर्च नहीं करता था। लाखों का स्वामी था; फटे कपड़े पहने रहता। केवल एक अच्छी बात थी उसमें। वह सत्संग में जाता था। वहां भी उसे कोई पूछता न था। सबसे अन्त में जूतों के पास बैठ जाता। कथा सुनता रहता। भोग पड़ने का दिन आया तो सब भेंट चढ़ाने कोई-न-कोई वस्तु लाये। वह कृपण भी एक मैले से रूमाल में बांध के कुछ लाया। सब लोग अपनी लाई वस्तु रखते गये, वह भी आगे बढ़ा। अपना रूमाल खोल दिया उसने। उसमें अशर्फियां थीं, पौण्ड और सोना। इन्हें पण्डित जी के समझ उंडेल कर वह जाने लगा। पण्डित जी ने कहा-"नहीं-नहीं सेठ जी! वहां नहीं,यहां मेरे पास बैठो।"

सेठ जी ने बैठते हुए कहा- "यह तो रुपयों का सम्मान है पण्डित जी, मेरा सम्मान तो नहीं?"

पण्डित जी ने कहा-"भूलते हो सेठ जी! रुपया तो तुम्हारे पास पहले भी था। यह तुम्हारे रुपये का नहीं, त्याग का सम्मान है।"

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

तीर्थ का वास्तविक अर्थ

- डॉ. विवेक आर्य

मन से प्रकाशित ब्रह्म ज्ञान रूप जल से जो मन के तीर्थ में स्नान करता है, तत्व दर्शियों का वही स्नान हैं. घर में या जंगल में जहाँ भी ज्ञानी लोग रहते हैं उसी का नाम नगर है, उसी को तीर्थ कहते हैं। हे भारत आत्मा नदी है, यही पवित्र तीर्थ है। इसमें सत्य का जल, धैर्य के किनारे तथा दया की लहरें हैं। इसमें स्नान करने वाला पुण्यात्मा पवित्र हो जाता है। आत्मा पवित्र है, नित्य है एवं निर्लेप है।

तीर्थ शब्द का अर्थ प्राय: लोग गंगा स्नान, पुष्कर, हरिद्वार, बालाजी, अमरनाथ, वैष्णो देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, तिरुपति बालाजी आदि की यात्रा अथवा सूर्य ग्रहण पर कुरुक्षेत्र आदि की यात्रा करते हैं। तीर्थों में स्नान आदि से धार्मिक पुस्तकों में लाभों का वर्णन किया गया है जैसे जो सैकड़ों सहस्त्रों कोस दूर से भी गंगा-गंगा कहे, तो उसके पाप नष्ट होकर वह विष्णुलोक अर्थात् बैकुण्ठ को जाता है (ब्रह्म पुराण 175/82) (पदम् पुराण उत्तर खंड 23/2)

पुष्कर, कुरुक्षेत्र, गंगा और मगध देश में स्नान करके प्राणी अपनी सात पूर्व की और सात परली पीढ़ियों को तार लेता है। गंगा नाम लेने से पाप से बचाती है, दिखने पर हर्ष देती है, स्नान करने और पीने से सातवें कुल तक पवित्र कर देती है। (महाभारत वन पर्व अ 75)

कलियुग में गंगा दर्शन से सौ जन्मों के पाप, स्पर्श करने से दो सौ जन्मों के पाप और स्नान तथा पीने से हजारों पाप नष्ट करती है। (आदि पुराण पृ.72)

जो मनुष्य पूर्व आयु में पाप करके पीछे से गंगा का सेवन करते हैं, वे भी परमगति पाते हैं। (महाभारत अनु. 26/3)

जैसे गरुड़ के देखते ही साँप विषरहित हो जाते हैं , वैसे ही गंगा के देखते ही मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं (वही 44)

हवा से उड़े हुए धूलिकण भी कुरुक्षेत्र में जिस किसी पर पड़ेंगे, वे अति पापी को मोक्ष में पहुँचा देंगे (महाभारत वनपर्व अ. 83)

इस प्रकार अनेक प्रमाण महाभारत, पुराण आदि ग्रंथों में मिलते हैं जिनमें विभिन्न स्थानों में गंगा आदि में स्नान को तीर्थ कहा गया है।

महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है -

- वेदादि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्य का मानना। सत्य करना । ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा। परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना, उपासना। शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान-विज्ञान आदि शुभगुण, कर्म दु:खों से तारने वाले होने से तीर्थ हैं और जो जल स्थलमय हैं वे तीर्थ कभी नहीं हो सकते क्योंकि 'जना यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि' मनुष्य जिनको करके दु:खों से तरे उनका नाम तीर्थ है। जल स्थल तराने वाले नहीं किन्तु डुबाकर मारने वाले हैं। प्रत्युत नौका आदि का नाम तीर्थ हो सकता है क्योंकि उनसे भी समुद्र आदि को तरते हैं। (११वां समुल्लास)

- 'तीर्थ' जिससे दु:खसागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म है उसी को तीर्थ समझता हूँ। इतर जलस्थलादि को नहीं । (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

- 'तीर्थ' शब्द का अर्थ अन्यथा जान के अज्ञानियों ने जगत् को लूटने और अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए मिथ्याचार कर रक्खा है । सो ठीक नहीं, क्योंकि जो-जो सत्य तीर्थ हैं, वे सब नीचे लिखे जाते हैं - देखो 'तीर्थ' नाम उनका है कि जिनसे जीव दु:ख रूप समुद्र को तरके सुख को प्राप्त हों । अर्थात् जो-जो वेदादिशास्त्र प्रतिपादित तीर्थ हैं, तथा जिनका आर्यों ने अनुष्ठान किया है, जोकि जीवों को दु:खों से छुड़ा के उनके सुखों के साधन हैं, उन्हीं को 'तीर्थ' कहते हैं । (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ग्रन्थ प्रामाण्याप्रामाण्य विषय)

मनुस्मृति 5/109 में मनु महाराज कहते हैं कि जल से शरीर शुद्ध होता हैं, मन और आत्मा नहीं। मन तो सत्याचरण- सत्य मानने, सत्य बोलने, सत्य ही करने से पवित्र होता है, जीवात्मा विद्या, योगाभ्यास और धर्माचरण से पवित्र होता है और बुद्धि पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यंत पदार्थों के ज्ञान से पवित्र होती है।

यजुर्वेद ४०/१४ में वेद भगवान कहते हैं अविद्या अर्थात् कर्म उपासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् यथार्थज्ञान से मनुष्य मोक्ष लाभ करता है।

अब जो लोग गंगा स्नान अथवा गंगा-गंगा बोलने से मुक्ति को मानते हैं उनसे कई गंगा किनारे स्थित नगरों में रहते हैं जो अगर गंगा स्नान से, गंगा दर्शन से, गंगा के स्मरण से उनके सभी पापों से निवृत्ति हो जाती तो उनको किसी भी प्रकार का दु:ख नहीं होना चाहिए था पर देखने में वे उसी प्रकार समान रूप से दुखी हैं जैसे और संसार के और लोग अपने पापकर्मों से दुखी हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि गंगा आदि के स्नान से किसी भी मनुष्य के पाप से बिना भोगे मुक्त नहीं हो सकते। यह निश्चित है कि कर्म का फल भोगे बिना उससे कोई भी छुट नहीं सकता।

अनेक धार्मिक पुस्तकों में कर्म फल सिद्धांत के अनेक प्रमाण हैं जैसे-

शुभ हो या अशुभ, किये हुए कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। करोड़ों कल्प बीत जाने पर भी बिना भोगे उसका क्षय नहीं होता। (ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति अ 37)

जब ब्रह्मा का दिन समाप्त होने पर सृष्टि की प्रलय होती है तो अभुक्त कर्म बीजरूप में बने रहते हैं, जब फिर नए सिरे से सृष्टि रचना होती है तो उसी कर्म बीज से अंकुर फूटने लगते है। पूर्व सृष्टि में जिस-जिस प्राणी ने जो-जो कर्म किये होंगे, फिर वे ही कर्म उसे बार-बार प्राप्त होते रहेंगे (देवी भागवत पुराण)

जैसे बछड़ा हजारों गायों के बीच अपनी माँ को ढूंढ लेता है, वैसे ही किया हुआ कर्म अपने करने वाले को जा पकड़ता है। (महाभारत शांतिपर्व 15-16)

मन से प्रकाशित ब्रह्म ज्ञान रूप जल से जो मन के तीर्थ में स्नान करता है, तत्त्व दर्शियों का वही स्नान है। घर में या जंगल में जहाँ भी ज्ञानी लोग रहते है उसी का नाम नगर है, उसी को तीर्थ कहते है। हे भारत आत्मा नदी है। यही पवित्र तीर्थ है। इसमें सत्य का जल, धैर्य के किनारे तथा दया की लहरें हैं। इसमें स्नान करने वाला पुण्यात्मा पवित्र हो जाता है। आत्मा पवित्र है, नित्य है एवं निर्लेप है। (महाभारत वन पर्व 200/92 एवं उद्योग पर्व 40/21)

ब्रह्मा का ध्यान परम तीर्थ, इन्द्रिय का निग्रह तीर्थ है। मन का निग्रह तीर्थ है। भाव की शुद्धि परम तीर्थ है। ज्ञान रूप तालाब में ध्यान जल में जो मन के तीर्थ में स्नान करके रागद्वेष रूप मल को दूर करता है, वह परम गति को प्राप्त करता है। (गरुड़ पूर्व अ 81/श्लोक 23-24)

मन से प्रकाशित ब्रह्म ज्ञान रूप जल से जो मन के तीर्थ में स्नान करता है, तत्त्व दर्शियों का वही स्नान हैं. घर में या जंगल में जहाँ भी ज्ञानी लोग रहते हैं उसी का नाम नगर है, उसी को तीर्थ कहते है। हे भारत आत्मा नदी है, यही पवित्र तीर्थ है। इसमें सत्य का जल, धैर्य के किनारे तथा दया की लहरें हैं। इसमें स्नान करने वाला पुण्यात्मा पवित्र हो जाता है। आत्मा पवित्र है, नित्य है एवं निर्लेप है।

(महाभारत वन पर्व 200/92 एवं उद्योग पर्व 40/21)

यहाँ पाठकगण यह सोच रहे होंगे कि पुराणों में एक ही विषय में विरोधाभास क्यों है। एक स्थान पर गंगा स्नान से मुक्ति का वर्णन हैं जबकि दूसरे स्थान पर केवल शुभ कर्म से मुक्ति है। इसका समाधान स्वामी दयानंद ने अत्यंत शोध और परिश्रम से निकाला था कि उपनिषद्, दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, रामायण-महाभारत, पुराण आदि ग्रंथों में जो कुछ भी वेदानुकूल अर्थात् वेद संगत है वह मानने योग्य है और जो भी वेद विपरीत है वह न मानने योग्य है।

इसलिए वेदों में वर्णित कर्म फल के अटूट सिद्धांत को मानते हुए पुराणों के ऊपर लिखित प्रमाण जिसमें केवल पुण्य कर्म से सुख प्राप्ति का होना बताया गया है, सत्य है।

तीर्थ के नाम पर स्नान आदि से पुण्य की प्राप्ति एक अन्धविश्वास मात्र है और मानव मात्र को सत्य मार्ग से भ्रमित कर उसे अंधकार में लेकर जाने वाला है।

संस्कृत का विकास कैसे हो ?

संस्कृत भाषा की आजीविका के क्षेत्रों में अध्ययन-अध्यापन एवं प्रशासनिक सेवाओं के अतिरिक्त सामाजिक एवं आध्यात्मिक तथा शारीरिक क्षेत्रों में भी पर्याप्त अवसर हैं।

भारतीय संस्कृति का ज्ञान संस्कृत के बिना असम्भव है। (भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा) मानवजीवन के सर्वांगीण विकास के लिए विज्ञान, कला एवं आध्यात्मिक ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है, इन तीनों का समन्वय केन्द्र केवल संस्कृत भाषा है। संस्कृत भाषा सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। यही भाषा विभिन्नता में एकतारूपी सूत्र (धागा) है।

संस्कृत भाषा को वर्तमान परिवेश में सामाजिक धारा में बनाए रखने के लिए अथवा लोकप्रिय बनाए रखने के लिए कुछ उपायों का वर्णन अधोलिखितानुसार द्रष्टव्य है-

1. पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों में परिवर्तन- संस्कृतभाषी विद्यार्थियों में प्राय: सामान्य ज्ञान (Basic Knowledge) का अभाव दिखाई देता है।

- संस्कृतवाङ्मय में निहित ज्ञान-विज्ञान का तथ्यपरक अध्ययन का अभाव।
- मध्यमादि (10+2) स्तर पर विज्ञान एवं गणितादि के पर्याप्त अध्ययन का अभाव।
- संस्कृताध्ययन में तकनीकी का नितान्त अभाव।
- संस्कृताध्यायी छात्रों में योग्यता छात्रवृत्ति (Merit scholarship) की पर्याप्त एवं सुचारु व्यवस्था का अभाव।
- संस्कृत की लोकप्रियता हेतु शास्त्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारणादि दक्षता की पर्याप्त प्रतियोगिताओं का विविध स्तरों पर अभाव।
- कौशल विकास (Skill Development) का भी संस्कृत विषय में समायोजन कर व्यवसायी अभाव को तिरोहित करना चाहिए।

2. प्रशासनिक सेवा (IAS,PCS) परीक्षाओं के अध्ययन केन्द्र- देश की प्रशासनिक सेवाओं में संस्कृत विषय अत्यन्त ही सरल सामान्यतया माना जाता है लेकिन व्यवस्थित अध्ययन के बिना छात्रों की सफलता का अनुपात प्राय: निम्नतर दृष्टिगोचर होता है। अत: व्यवस्थित अध्ययन केन्द्रों की सुलभता का अभाव भी अपसारित करना चाहिए।

3. व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों का अभाव- संस्कृत भाषा में व्यावसायिक केन्द्रों का अत्यन्त अभाव है यथा कर्मकाण्डी, सम्पादक, अनुवादक, समाज-सुधारक, कमेण्टेटर दूरदर्शन एवं आकाशवाणी आदि प्रसारकों हेतु व्यवसायों के व्यवस्थित केन्द्रों का होना अत्यन्त आवश्यक है।

4. संस्कृत चलचित्रों (सिनेमादि) केन्द्रों का उपस्थापन- लोकविलासी संस्कृत फिल्मों, नाटकों का अधिकाधिक प्रसारण तभी सुलभ होगा, जब इनके व्यवस्थित प्रशिक्षण केन्द्र होंगे। संस्कृत भाषा को प्रिण्ट एवं इलैक्ट्रानिक मीडिया में अधिकाधिक समायोजित करना चाहिए।

5. संस्कृत संस्थाओं को बढ़ावा देना- यद्यपि सरकार द्वारा संस्कृत संस्थाओं को नाम मात्र अनुदान उपलब्ध करवाया जाता है परमपि उसमें बढ़ोत्तरी आवश्यक है तभी विशुद्ध संस्कृत वैज्ञानिक, इन्जीनियर, चिकित्सक आदि समाज को उपलब्ध हो पाएंगे।

-शिवदेव आर्य,
गुरुकुल पौधा, देहरादून
उत्तराखण्ड

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में 5 जून 2016 को विशाल युवा चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण और भव्य दीक्षांत समारोह डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सेक्टर-7 रोहिणी में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ध्वजारोहण महाशय धर्मपाल ने किया। उत्तम संस्कारों एवं रचनात्मक कार्यो से सभ्य समाज का निर्माण होगा और नवयुवकों के चरित्रवान बनने से राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा। आर्य समाज सदैव युवकों को चरित्रवान बनाने एवं देश सेवा मे अग्रणीय भूमिका अदा करता रहा है। आर्य समाज ने समाज को पाखंड, छुआछूत, सामाजिक बुराइयों तथा नशों इत्यादि से निजात दिलाने तथा चरित्र निर्माण के लिए विभिन्न स्थानों पर चरित्र निर्माण एवं प्रशिक्षण शिविरों का आयोज करता रहा है।

इस अवसर पर डॉ. महेश विद्यालंकर ने 219 शिविरार्थियों को देश, समाज-कल्याण के साथ सामाजिक बुराईयां छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। आर्य वीरों की परेड का निरीक्षण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने किया।

इस अवसर पर शिविर में पधारे स्वामी विदेह योगी ने कहा कि राज सिंह आर्य एक ओजस्वी आर्य वीर और विकास पुरुष थे जिन्होंने सदैव आर्य समाज की गरिमा को शिखर तक पहुचाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया जो आज के नवयुवकों के चरित्र निर्माण के क्षेत्र में मार्ग प्रदर्शित कर रहा है।

इस अवसर पर उप महापौर डॉ. नीलम गोयल, आचार्य सत्यवीर, संचालक जगवीर आर्य, सुन्दर आर्य ने भी सम्बोधन किया। आर्यवीरों ने सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन किए, देश सेवा के लिए तत्पर रहने एवं पाखण्ड और अंधविश्वास को निर्मूल करने के संकल्प दिलवाए गए।

मुख्य अतिथि प्रदीप तायल, राकेश ग्रोवर ने ''सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी संदीप आर्य'' व प्रतिभाशाली वीरों को पुरस्कृत किया, पर्यावरण विद् रमेश गोयल ने यहां पर्यावरण दिवस पर अभियान चलाया।

मंच संचालन श्री बृहस्पति आर्य ने किया।

शिविर समापन समारोह के अवसर पर आर्यवीरों के आशीवार्द देने पहुंचे महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री बलदेव राज सेठ जी, श्री खेमचन्द चावला जी एवं उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान। प्रदर्शन करते आर्यवीर।

दक्षिण दिल्ली नगर निगम द्वारा सड़क का नामकरण : आर्यसमाज मार्ग

पश्चिमी दिल्ली स्थित आर्यसमाज मन्दिर बी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली के सामने वाली सड़क का नामकरण समाज के अधिकारियों के प्रयास से दक्षिण दिल्ली नगर निगम द्वारा 'आर्यसमाज मार्ग' के नाम से दिनांक 11 जून, 2016 को किया गया। नामकरण के शिलापट्ट का लोकार्पण महापौर श्री श्याम शर्मा जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर निगम एवं समाज के प्रमुख महानुभाव भारी संख्या में उपस्थित थे। नामकरण से पूर्व आर्यसमाज की यज्ञशाला में हवन एवं प्रवचन का भी आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय आम जनता स्थानीय प्रबुध महानुभावों ने भी भाग लेकर अपनी आहुतियां प्रदान की। *- वीरेन्द्र कुमार खट्टर*

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के नव निर्मित आचार्य बलदेव भवन एवं चौधरी मित्रसेन आर्य वाटिका का उद्घाटन

गत दिनों 22 मई, 2016 को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के दयानन्द मठ परिसर में नव निर्मित आचार्य बलदेव भवन का उद्घाटन हरियाणा सरकार के वित्तमन्त्री कै. अभिमन्यु जी द्वारा एवं चौधरी मित्रसेन आर्य वाटिका का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल हिमाचल, आचार्य देवव्रत जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर रोहतक से विधायक श्री मनीष ग्रोवर एवं जिला परिषद के चेयरमैन बलराज कुण्डू भी उपस्थित थे। शिलापट्ट के साथ सभा प्रधान आचार्य विजयपाल एवं मन्त्री मा. रामपाल जी।

अपने बच्चों को उनके जन्मदिन पर दें

ऐतिहासिक जानकारी से भरपूर चित्रकथाएं

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें- वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 मो. 09540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

अंधविश्वास उन्मूलन जन जागरण यात्रा एवं सार्वजनिक जन सभा

जन-जागरण यात्रा जब अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचकर जन सभा में परिवर्तित हो गई तथा आर्यसमाज से इतर जन साधारण जिनके जागरण के लिए यह यात्रा थी भारी संख्या में एकत्र हो गए। मंच से सर्वश्री स्वामी देवव्रत सरस्वती, राष्ट्रकवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, एवं श्री रवि चड्ढा आदि ने सम्बोधित किया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर आर्यवीर तख्तियों एवं ओ३म् ध्वज तथा बैंड के साथ जन जागरण यात्रा में भाग लेते हुए

अंधविश्वास एवं पाखण्ड के विरुद्ध जन जागरण यात्रा में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री रविदेव चड्ढा, श्री सत्यानन्द आर्य, सारस्वत मोहन मनीषी, अरुण प्रकाश वर्मा, योगेश आर्य, वीरेन्द्र सरदानाएवं अन्य महानुभाव। जो वरिष्ठ महानुभाव के लिए ई-रिक्शा की भी व्यवस्था की गई थी।

जन जागरण यात्रा के उपरान्त जन सभा को सम्बोधित करते राष्ट्रकवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी एवं सैन्ट्रल मार्केट में सभा स्थल पर उपस्थित आर्यवीर एवं जन सामान्य

जन जागरण यात्रा के मार्ग में शिविर में प्राप्त विद्याओं का प्रदर्शन करते विभिन्न राज्यों से पधारे आर्यवीर

शरीर, मन एवं आत्मा पवित्र होते हैं योग से - डॉ. विनय विद्यालंकार

'मनुष्य जीवन का उद्देश्य सुख, शांति एवं आनन्द प्राप्त करना है, योग द्वारा शरीर स्वस्थ होता है। रोगों से मुक्ति मिलती है तथा मन पवित्र व स्थिर होता है जिससे तनाव व अवसाद समाप्त होता है जिससे आत्मा पवित्र होती है और आत्मा में पवित्रता व आनंद की प्राप्ति होती है।' यह उद्बोधन उत्तराखंड से पधारे वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार ने आर्य समाज विज्ञाननगर कोटा में रविवार 14 जन, 2016 विश्व योग दिवस की तैयारी के अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मनुष्य भौतिक सुखों से संतुष्ट रहना चाहता है, आत्मा को आनन्द योग से प्राप्त होता है।

पतंजलि योग समिति राजस्थान के संगठन मंत्री अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि योग से प्रत्येक क्षेत्र में उच्च स्तर को प्राप्त करते हुए योग दिवस को हम योग पर्व के रूप में अपनायें। जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि योग हमें समाजसेवा से जोड़ता है। आर्यसमाज के पूर्व पधान जे. एस.दुबे ने कहा कि नित्य योग करने से सकारात्मक सोच आती है। योगी दम्पति राकेश चढ्डा व श्रीमती पूनम चढ्डा ने योग साधकों को योगाभ्यास करवाया। इस अवसर पर आर्यसमाज गायत्री विहार कोटा के मंत्री उमेश कुर्मी व अन्य योग साधक महिला पुरुष उपस्थित थे।

- प्रचार सचिव

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

The Mysterious Hand

"It is you who deposit milk in the black and the red cows and in the cows with spotted skin."

"O Blissful Lord, You have generated herbs, waters and milch cows; You have dispelled darkness with light; You have sustained and expanded the mysterious mid-space."

"He is the One Lord, who furthering the light of eternal law, has pervaded every bit of His Creation so that He may work incessantly. He, the Controller, controls all the seasons which He sends to the earth."

त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च।
परुष्णीषु रुशत् पयः।।(Sv.595)

Tvam etad adharayah krsnasu rohinisu ca.
parusnisu rusat payah..

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः।
त्वमातनोरुर्वा३न्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ।।
(Sv.604)

Tvam ima osadhih soma visvastvam apo ajanayas tvam gah.
tvam atanorurvantariksam tvam jyotisa vi tamo vavartha..

य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरूत्तिरन्।
ऋृतूनुत्सृजते वशी।। (Sv.1709)

Ya idam pratipaprathe yajnasya svar uttiran. Riton utsriate vasi..

The Priceless Friend

"O Opulent Lord, mighty as thunder, the wielder of adamantine justice, I shall not sell my devotion to you for all the wealth in the world, not for a hundred, not for a thousand, not for a million, for You are Lord of countless wealth."

"We as your mortal devotees chase You the Divine for our fortune. You are the imperishable life- force, inspirer of our benevolent deeds, the best guide and sinless, and as such, we pray, take us across all miseries."

महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ।।
(Sv.291)

Mahe ca na tvadrivah para sulkaya diyase.
na sahasraya nayutaya vajrivo no sataya satamagha..

सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये।
अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिमनेहसम्।।
(Sv.62)

Sakhayastva vavrmahe devam martasa utaye.
apam napatam subhagam sudams asam supraturttim anehasam..

The Kindest and the Most Just

"How amazing, even a little praise of Him! He magnifies and accepts it with delight, indeed, while we exalt Him, we exalt ourselves."

"The defiant offarder does not enkindle His love, nor does he win His way to the aspired riches. Peace and pleasure, joy and affection are for him who longs for and also gives to others such favour."

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते।
तदिद्ध्यस्य वर्धनम्।।(Sv.224)
शं पदं मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्।।(Sv.441)

Kadu pracetase mahe vaco devaya sasyate.
tadidhyasya vardhanam..
Sam padam magham rayisine na kamam avrato hinoti na sprsadrayim..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ -4

गतांक से आगे....

पिछले पाठ में हमने गम् धातु के बारे मे पढ़ा और उसका प्रयोग सीखा। इस पाठ में हम कुछ और धातुओं का उदाहरण लेकर वाक्य बनाएँगे। नीचे दी गई तालिका में धातु और उसका (उत्तम पुरुष-एकवचन), (प्रथम पुरुष-एकवचन) में प्रयोग करना दिखाया गया है। इनको पढ़ें और व्यक्तिगत शब्दावली (Vocabulary) या परिभाषिकी (Vocabulary) में उतारें।

धातु	**उ.पुरुष**	**एकवचन**	**प्र.पुरुष**	**एकवचन**
वद्	वदामि	मैं बोलता हूँ।	वदति	वह बोलता है।
पठ्	पठामि	मैं पढ़ता हूँ।	पठति	वह पढ़ता है।
खाद	खादामि	मै खाता हूँ।	खादति	वह खाता है।
लिख्	लिखामि	मैं लिखता हूँ।	लिखति	वह लिखता है।
हस्	हसामि	मैं हसता हूँ।	हसति	वह हसता है।
रक्ष्	रक्षामि	मैं रक्षा करता हूँ।	रक्षति	वह रक्षा करता है।
नम्	नमामि	मैं नमता हूँ।	नमति	वह नमता है।
पा (पिब)	पिबामि	मैं पीता हूँ।	पिबति	वह पीता है।
दृश् (पश्य)	पश्यामि	मैं देखता हूँ।	पश्यति	वह देखता है।

नीचे दी गई तालिका में कुछ और वाक्य सिखाए गए हैं। यह वाक्य ऊपर दी गई धातुओं का प्रयोग करके ही बनाए गए हैं। आप खुद भी ऐसे ही क्रमरहित वाक्य बनाने का प्रयास करें। यह करने से आपकी संस्कृत भाषा पर पकड़ मजबूत होगी।

संस्कृत	**हिन्दी**
त्वम् वदसि	तुम बोलते हो।
ते वदन्ति।	वे सब बोलते हैं।
सा वदति।	वह बोलती है।
यूयम् वदथ।	तुम सब बोलते हो।
त्वम् पठसि।	तुम पढते हो।
युवाम् पठथः।	तुम दोनों पढ़ते हो।
ते पठतः।	वे दोनो पढ़तीं हैं। (स्त्री.)
यूयम् पठथ।	तुम सब पढ़ते हो।
वयम् लिखामः।	हम सब लिखते हैं।
आवाम् लिखावः।	हम दोनों लिखते हैं।
ते हसन्ति।	वे सब हसते हैं।
ताः हसन्ति।	वे सब हसती हैं।(स्त्री.)
सः रक्षति।	वह रक्षा करता है।
युयम् रक्षथ।	तुम सब रक्षा करते हो।
त्वम् रक्षसि।	तुम रक्षा करते हो।
आवाम् नमावः।	हम दोनो नमस्ते करते हैं।
युवाम् नमथः।	तुम दोनों नमस्ते करते हो।
सा पिबति।	वह पीती है। (स्त्री.)
ते पिबतः।	वह दोनो पीती हैं।

इसी तरह हम कुछ-कुछ धातुओं को लेकर वाक्य भी बनाते जाएँगे और नए शब्द भी सीखते जाएँगे। निरंतर अभ्यास करें चाहे हर दिन कम समय के लिए ही, ध्यान रहे कि किसी भी भाषा की शुरुआत में आपको रोज अभ्यास करना होगा, अगर ज्यादा अन्तराल तक अभ्यास न किया गया तो आप सब भूल जाएँगे, और फिर से शुरुआत करनी होगी। ध्यान रहे मेहनत का फल मीठा होता है।

क्रमशः

- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

पराधीन देश

देश के स्वतन्त्र होने से पहले की बात है। दयानन्द मठ, दीनानगर में ब्रह्मचारियों ने स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी का लकड़ी का बड़ा तख्तपोश लगाकर उन्हें सोने के लिए कहा। वे लेटने लगे तो एक शिष्य ने कहा, ''ठहरिए, सिरहाने की ओर नीचे दो ईंटे दे दूँ अन्यथा सिर नीचा रहेगा।''

इसपर श्री महाराज सहज स्वभाव से बोले, ''ईंटें रहने दो। जब तक भारत पर अंग्रेज का राज्य है, सिर तो नीचा ही रहेगा।''

पाठक वृन्दा! तनिक विचारिए कि आर्यसंन्यासियों के हृदय में देश की स्वाधीनता के लिए कितनी आग थी। आज देश में अनेक पादरी, अनेक मौलवी व कई अन्य पन्थाई लोग हमारे देशवासियों को अपने-अपने मत में लाकर इस देश को खण्डित व परतन्त्र करना-कराना चाहते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरीखे अनेक तपस्वी इस देश को इस समय चाहिएँ। सहस्त्रों सुपठित युवकों को देश के प्रत्येक भाग में धर्मरक्षा व धर्मप्रचार के लिए प्रतिदिन कुछ-न-कुछ समय देना होगा, तब जाकर पूर्वजों के तप-त्याग की लाज बचेगी और देश भी तभी बचेगा।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित कक्षाएं

व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षा

दिनांक : 8 मई 2016 से निरन्तर प्रति रविवार

समय : सायं 5 से 7 बजे

स्थान : गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम, आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लॉक हरी नगर, नई दिल्ली-110064

सम्पर्क: महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज (मो.9650183184)

वेद मन्त्र पाठ कक्षा

दिनांक : 7 मई 2016 से निरन्तर प्रति शनिवार

समय : सायं 4:30 से 6 बजे

स्थान : आर्य समाज सी-3, पंखा रोड, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

अध्यापन : आचार्य प्रणवदेव शास्त्री

सम्पर्क : शिव कुमार मदान (9310474979), श्री अजय तनेजा (9811129892)

प्रशिक्षण के उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-2 में ध्यान योग शिविर

आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश-2 व एन्क्लेव-2, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में 20 से 25 जून 2016 के मध्य ध्यान योग शिविर का आयोजन होगा। शिविर का संचालन परोपकारिणी सभा अजमेर से आचार्य प्रभाकर जी करेंगे।

-प्रियव्रत, प्रधान

मातृदिवस पर विशेष यज्ञ

आर्य समाज जयपुर दक्षिण के साप्ताहिक सत्संग 8 मई 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय मातृदिवस (मदर्स डे) पर विशेष आहुतियां एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री यश पाल यश जीकी 86वर्षीय माताश्री ने अपनी सहयोगी महिलाओं के साथ यज्ञ किया। इस अवसर पर श्री यशपाल यश जी ने मां शब्द को 'ऑल इन वन' गुणों की दृष्टि से परिभाषित किया।

- ईश्वर दयाल माथुर

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज अशोक नगर, नई दिल्ली

प्रधान	- श्री प्रकाश चन्द्र आर्य
मन्त्री	- श्री पवन गांधी
कोषाध्यक्ष	- श्री ओम प्रकाश चावला

आर्य समाज अमर कॉलोनी

प्रधान	- श्री जितेन्द्र कुमार डाबर
मन्त्री	- श्री ओम प्रकाश छाबड़ा
कोषाध्यक्ष	- श्री सुभाष आर्य

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद

प्रधान	- श्री सत्यवीर चौधरी
मन्त्री	- श्री योगेश आर्य
कोषाध्यक्ष	- श्री सन्तलाल मिश्र

प्रगति के पथ पर आर्य समाज संदेश विहार, दिल्ली

आर्य समाज संदेश विहार पीतमपुरा, दिल्ली विगत 25 वर्षो से समाजोत्थान सम्बन्धी गतिविधियों में संलग्न है। समाज में दैनिक यज्ञ, साप्ताहिक सत्संग, प्रत्येक रविवार को श्री देवेन्द्र मित्तल एवं उनके सहयोगियों के सहयोग से भण्डारे का प्रबन्ध किया जाता है। इसी के साथ मूलचन्द आत्माराम स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक औषधालय, नि:शुल्क होम्योपैथिक औषधालय, नि:शुल्क नेत्र चिकित्सालय, दन्त चिकित्सालय, महिलाओं के लिए सिलाई शिक्षा केन्द्र, कक्षा 6 से बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा देने का प्रबन्ध एवं आनन्दवास के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक शिक्षा एवं भौतिक शिक्षा हेतु आर्य कुलम् स्थापित किया हुआ है। समाज में प्रत्येक प्रकार के हवन-संस्कार के लिए सुयोग्य पुरोहित की व्यवस्था भी है साथ ही समाज हवन के लिए बिना किसी लाभ के हवन सामग्री, समिधा, हवन कुंड आदि की व्यवस्था करता है। समाज में 1 मई से सुबह 5.15 से 6.15 बजे तक योग कक्षा भी आयोजित की जा रही हैं। कोई भी महानुभाव पुरोहित जी की सेवाओं के लिए मो. 9811976819 पर सम्पर्क कर सकते हैं। *-मंत्री*

आर्यसमाज नवाबगंज बरेली का 91वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नवाबगंज (बरेली) उ. प्र. के 91वें त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव 29 मई को समाप्त हो गया। जहां 44 जोड़े सपत्नीक यज्ञ में शामिल हुए। कस्बे के आर्य समाज मंदिर में संगीतमय प्रवचन में वैदिक प्रवक्ता डॉ. आनन्द पुरुषार्थी, योगेशदत्त व बहन अल्का आर्या ने कहा कि 'यज्ञ जीवन की प्रत्येक समस्या का निदान करते है। यज्ञ को स्वास्थ्य, समृद्धि, शांति, संस्कार व पर्यावरण शुद्ध के लिए प्रमुख साधन बताया।' कार्यक्रम में सर्वश्री भानु प्रताप आर्य, राम किशोर आर्य, विश्वमित्र कोहली, देवदत्त आर्य रामपाल आर्य, राजीव कुमार, वेद प्रकाश रस्तोगी, श्याम रस्तोगी, हेम देव शास्त्री, डॉ. चोखे लाल, रमेश चन्द्र आर्य, राजेन्द्र प्रकाश आर्य, अमित गुप्ता आदि की भागीदारी रही।

-विवेक आर्य

आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर का 21वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर ने 14 मई 2016 को अपना 21वां वार्षिकोत्सव भजन सन्ध्या के साथ धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर नगर के जाने माने वैदिक भजन गायकों ने अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। समारोह के मुख्य अतिथि लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी थे। मंत्री श्री सुरेश साहनी एवं कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश साहनी ने आगंतुकों का आभार प्रकट किया।

-ईश्वर दयाल माथुर, उपप्रधान

प्रथम पृष्ठ का शेष — पलायन : पहले कश्मीर, अब ......

उन्माद बढ़ता गया और योजना बद्ध तरीके से बाकायदा मस्जिद की मीनारों से घाटी को खाली करने का आदेश दे दिया गया था। जिसका नतीजा करीब 4 लाख कश्मीरी पंडित आज अपने ही देश में दर-दर की ठोकर खा रहे हैं वो भी उस देश में जिसे लोग गर्व से हिंदुस्तान कहते हैं। कश्मीर त्रासदी को एक हादसा कहने वाले राजनैतिक दल आज चुप क्यों है? कश्मीर में सेना के रिटायर जवानों के लिए मकान बनाने से धार्मिक समीकरण बिगड़ने की बात करने वाले दल के नेता आज कैराना से पलायन करने वाले हिन्दुओं के मामलों को राजनीति क्यों बता रहे हैं? पिछले वर्ष महाराष्ट्र विधान सभा के अन्दर रमजान के दिनों एक मुस्लिम के रोटी खाने को लेकर इतना हो-हल्ला मचाने वाले, उसको अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप देने वाली मीडिया और देश के नेता ऐसी घटनाओं पर चुप्पी क्यों साध लेते हैं? यहाँ इनका अंदाज शतुरमुर्गी क्यों हो जाता है? वैसे हकीकत भी यही है कि वह चाहे असम, केरल हो या बंगाल, वहां के मुस्लिम बहुल जिलों में हिन्दुओं को भय के साए में ही जीना पड़ रहा है। पश्चिम बंगाल के 22 से 24 जिलों में मुस्लिम आबादी को 50 प्रतिशत से ऊपर वे पहले ही पहुँचा चुकी है, केरल में क्या हो रहा है, वहां से घबराये और डरे हुए हिन्दू लोग मुस्लिम बाहुल इलाकों से पलायन कर रहे हैं, मलप्पुरम और मालाबार से कई परिवार सुरक्षित ठिकानों को निकल गये हैं और दारुल-इस्लाम बनाने के लिये जगह खाली होती जा रही है। 580 किमी. लम्बी समुद्री सीमा के किनारे बसे गाँवों में पोन्नानी से बेपूर तक के 65 किमी इलाके में एक भी हिन्दू मछुआरा नहीं मिलता, सबके सब इलाका छोड़कर भाग चुके हैं।

मलप्पुरम सहित उत्तर केरल के कई इलाकों में दुकानें और व्यावसायिक संस्थान शुक्रवार को बन्द रखे जाते हैं और रमजान के महीने में दिन में होटल खोलना मना है। असम के कई जिलों समेत बंगाल के सीमावर्ती जिले नादिया और चौबीस परगना में से हिन्दू अपनी जमीन-जायदाद बेचकर भागने को मजबूर हुए थे। किन्तु इन सब हादसों पर लोग सिसकते रहे और हमेशा सरकारे मौन रही जिस कारण पहले कश्मीर हुआ फिर असम, बंगाल आज यह सब कैराना में दोहराया जा रहा है, अब इस विषय में राज्य और केंद्र सरकार को अपराधियों के खिलाफ कड़े कदम उठाने चाहिए ताकि देश की समरसता और धर्मनिरपेक्षता को खतरा न हो। कभी कल वहां से भी कश्मीर की तरह आवाज आये कि कैराना में लेंगे आजादी? *राजीव चौधरी*

शोक समाचार — डॉ. जयदेव वर्मा जी को पत्नीशोक

आर्य समाज नांगल राया नई दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं वैदिक विद्वान डॉ. जयदेव वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला का दिनांक 13 जून, 2016 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन दिनांक 16 जून, 2016 को आई. एम.ए. हॉल, इंस्टीट्यूशन एरिया, डी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-58 में सायंकाल में आयोजित की जाएगी।

छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष को पुत्र शोक

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री अवनी भूषण पुरंग के 32 वर्षीय पुत्र अर्णव पुरंग का हृदयगति रुक जाने के कारण आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार राम नगर भिलाई स्थित श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। दिनांक 12 जून को आर्य समाज सेक्टर-6 भिलाई में श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उड़ीसा), श्री दीनानाथ वर्मा, मंत्री छत्तीसगढ़ सभा, पंजाबी ब्राह्मण समाज दुर्ग भिलाई के अध्यक्ष आदि अनेक लोगों ने पहुचंकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :........................ गोत्र........................
2 जन्मतिथि:.................. स्थान : .... समय :..................
3. रंग.................. वजन .... लम्बाई ....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/.................. मासिक आय..................

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम .... व्यवसायः .... मासिक आय..................
7. पूरा पता:..................
दूरभाष :.................. मोबा.:.................. ईमेल :..................
8. मकान निजी/किराये का है..................
9. माता का नाम :.................. शिक्षा :.................. व्यवसाय : ....
10. भाई - अविवाहित..................विवाहित.................. । बहिन- अविवाहित..................विवाहित.................. ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक)..................
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/युवती यदि इनमें से होतो सही पर (✓) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. विशेषः किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें: ....

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, जनकपुरी, ए-ब्लॉक, नई दिल्ली
दिनांक :- 3 जुलाई 2016 समय :- प्रात: 10 बजे से

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428
श्री एस.पी. सिंह, संयोजक दिल्ली प्रदेश मो. 09540040324
श्री विकास नरुला, प्रधान, आर्यसमाज जनकपुरी, ए-ब्लॉक, नई दिल्ली मो. 09990333798
श्री विरेन्द्र सरदाना, मंत्री, आर्यसमाज जनकपुरी, ए-ब्लॉक, नई दिल्ली मो. 09911140756

नोट : 1. ई-मेल एडरेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है
2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नही होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। **फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।**
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/- (तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. **माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 16/17 जून, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 जून, 2016

बस स्टैण्ड व बाजारों में विक्रय किए "सत्यार्थ प्रकाश"

दिनांक 5 जून को रावतभाटा हाट बाजार में आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्डा की अगुवाई में ओमप्रकाश आर्य, रामचरण आर्य, प्रेमनाथ कौशल, के.सी. , श्योराज वशिष्ठ, योगेश आर्य, शैलेश, रमेशचन्द्र, जोतसिंह ने भीड़ वाले स्थल व बस स्टैण्ड पर 10/- में सत्यार्थ प्रकाश बेचे। अर्जुन देव चड्डा ने गले में मेधा माइक डालकर माइक से भीड़ एकत्रित कर आवाज लगाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश 500 पृष्ठों व रुपये 50/- कीमत का मात्र रुपये 10 /- में दिया जा रहा है तो सत्यार्थ प्रकाश लेने वालों की लाइन लग गई। देखते ही देखते 100 सत्यार्थ प्रकाश बिक गए। इस अवसर पर श्री चड्डा ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश घर-घर पहुंचाने के लिए आर्यसमाज को कार्यक्रम बनाने होंगे। *-नरदेव आर्य*

स्वास्थ्य चर्चा

दिमाग बनाएं ताकतवर

लम्बी छुट्टियों के बाद बच्चों के स्कूल खुलने वाले हैं। स्कूल खुलते ही वहीं भारी-भरकम बस्ते का बोझ और पढ़ाई की टेंशन बच्चों के दिमाग को कमजोर करने लगती है उन्हें बार-बार याद करने पर भी पढ़ा हुआ याद ही नहीं रहता। आईए दिमाग को ताकतवर बनाने के लिए कुछ घरेलू उपाय देखते हैं जिसके सेवन से बच्चे तो क्या बड़ों का भी दिमाग ताकतवर बनता है-

1. ब्रह्मबूटी 7 ग्राम, बादाम गिरी 7, काली मिर्च 7 रात को 200 ग्राम पानी में भिगोएं। प्रात: पीस छानकर खाण्ड मिलाकर प्रात: 15-20 दिन खाली पेट पीयें।

2. नाग भस्म एक रत्ती शुद्ध शिलाजीत एक रत्ती प्रवाल पिष्ठी आधी रत्ती को शहद से प्रात: सायं लें।

3. चांदी भस्म एक रत्ती, प्रवाल पिष्ठी एक रत्ती, स्मृति सागर रस एक रत्ती को ब्रह्मी शर्बत से प्रात: सायं लें।

4. चांदी भस्म एक रत्ती, बंग भस्म एक रत्ती, शुद्ध शिलाजीत एक रत्ती को शहद से प्रात: सायं लें।

5. अभ्रक भस्म एक रत्ती को शहद से लें ऊपर से असगंधारिष्ट 4-4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय लें।

6. सारस्वत चूर्ण 3 ग्राम शहद से प्रात: सायं शहद में कम घी मिलाकर लें।

7. ब्रह्मी अर्क 50 ग्राम को दूध में मिलाकर दिन में 3 बार लें। यह मस्तिष्क दोषों मनोबह स्त्रोतों की खराबी में विशेष लाभकारी है।

8. योगराज गुग्गुल की 3-3 गोलियां गर्म पानी या गर्म दूध से प्रात: सायं लें। इससे मस्तिष्क तन्तुओं, नर्वस सिस्टम, ज्ञान तन्तुओं और वात बाहनी नाड़ियों के दोष दूर हो जाते हैं।

9. 50 ग्राम सोंफ, आधा किलो पानी में रात को भिगोएं। प्रात: उबालें एक चौथाई रह जाने पर निथार कर इस पानी को 250 ग्राम देशी घी में डालकर फिर उबालें। पानी जल जाने पर उतार कर ठंडा कर सोते समय 1 चम्मच घी 250 ग्राम दूध में खांड मिलाकर पियें।

10.त्रिफला पिसा 200 ग्राम में खांड 100 ग्राम मिलाकर 10 ग्राम प्रात: पानी से प्रयोग करें। इससे दिल दिमाग दोनों ताकतवर बन जाते हैं।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित "चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद" पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

15वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

आवेदन की अन्तिम तिथि : 25 जून, 2016

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 15वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्यसमाज मन्दिर ए ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक 3 जुलाई 2016 को आयोजित किया जा रहा है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र-अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण की **अन्तिम तिथि 25 जून, 2016 है।** इसके पश्चात् प्राप्त आवेदनों को तत्काल पंजीकरण माना जएगा और उनका परिचय पुस्तिका में प्रकाशन नहीं हो सकेगा। **पंजीकरण शुल्क 300/- रुपये।** आवेदन फार्म पृष्ठ 4 पर प्रकाशित किया गया है। फार्म **www. thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है तथा फोटो प्रति भी मान्य है अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुन देव चड्ढा — राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428
एस.पी. सिंह — दिल्ली संयोजक, मो. 9540040324

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह